प्रश्न:- आधुनिक काल (पद्य) की प्रवृत्तियों को बतायें ?

उत्तर- शेषभाग:-

प्रयोगवाद और नई कविता

सन् 1943 के आसपास छायावादी कविता के प्रति एक अन्य प्रतिक्रिया प्रयोगवाद काव्य-धारा के रूप में प्रकट हुई। इस कविता में छायावादी वैयक्तिकता को हृदय के धरातल पर ग्रहण न करके बौद्धिक धरातल पर ग्रहण किया गया है। 1943 ई० में अज्ञेय के सम्पादकत्व में सात कवियों की कविताओं का संग्रह 'तार-सप्तक' प्रकाशित हुआ। प्रथम सप्तक के कवि हैं- सर्वश्री अज्ञेय, मुक्तिबोध, नेमिचन्द्र जैन, भारतभूषण अग्रवाल, प्रभाकर माचवे, माथुर और रामविलास शर्मा। तदनन्तर 1951 में दूसरा सप्तक भी प्रकाशित हुआ। इसके अतिरिक्त कुछ पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से प्रयोगवादी कविता का विकास हुआ। सन् 1953 के उपरान्त 'नई कविता' के नाम से प्रयोगवादी काव्य-धारा का विकसित रूप प्राप्त होता है। 'नई कविता' की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह वाद से सर्वथा मुक्त है। नई कविता शुद्ध साहित्यिक वाद है। इस कविता के वस्तु-पक्ष में निराशा, वेदना, नास्तिकता, आस्था, विश्वास, हास्य-व्यंग्य, यथार्थ-चित्रण, बीभत्स वर्णन, व्यक्तिवाद, समष्टि-भावना आदि विरोधाभासी प्रतीत होने वाली प्रवृत्तियाँ हैं और शिल्प-पक्ष में नए उपमानों, नए प्रतीकों, नए बिम्ब-विधान, मुक्त-छन्द आदि की ओर कवि का झुकाव दिखाई देता है।

इस तरह आधुनिक कविता में निरन्तर विकास हुआ है। भारतेन्दु और द्विवेदी युग के कवियों ने समाज की आलोचना करके समाज-सुधार और स्वदेश-प्रेम की भावना को प्रकट किया है। छायावादी कवि अन्तर्मुखी है। प्रगतिवादी कवि सामाजिक समता के लिए क्रान्ति का आह्वान करता है और प्रयोगवादी काव्य में वस्तु और शिल्प की दृष्टि से नए प्रयोग हैं।

आधुनिक कविता इस प्रकार अपने क्षेत्र को पर्याप्त विस्तृत बना रही है। इसमें अभाव भी है, फिर भी इसका भविष्य ~~उज्ज्वल~~ उज्ज्वल है।

<u>अभ्यासार्थ प्रश्न</u>

<u>प्रश्न</u> :- आधुनिक काल की प्रवृत्तियों या विशेषताओं पर प्रकाश डालें ?

<u>पता</u>:-
डॉ० समदर्शी कुमार
विभाग- हिन्दी (S.R.A.P.C) (B.R.A.B.U.M)
दिनांक - 13.02.2023
मो० नं० - 7909046087